शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,

पनवेल

हिंदी दिन के उपलक्ष में विशेषांक

1

शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, पनवेल

हिंदी दिन के उपलक्ष में विशेषांक

'करो अपनी भाषा पर प्यार'

१४सितंबर, २०२४

प्रा. बिजली दडपे
मार्गदर्शक (हिंदी विभाग)

मा. डॉ. रमा भोसले
प्रधानाचार्य

प्राजक्ता पवार
छात्राध्यापक, हिंदी विभाग

प्रस्तावना

भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, बल्कि वह अपने साथ साहित्य,समाज,संस्कृति एवं कला का वहन भी सशक्त तरीके से करती है चाहे यह भाषा मातृभाषा हो, प्रादेशिक भाषा हो, राज्य भाषा हो, या बोली भी क्यों ना हो। बचपन में व्यक्ति का व्यक्ति का लालन पालन एवं शिक्षा प्रदान का कार्य माता द्वारा संपन्न होता है लेकिन, एक सीमा के बाद यह कार्य भाषा द्वारा भी संपन्न होता है। माता की गोद जैसे भाषा भी अपनी गोद में सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं मानवीय अंगों से मनुष्य का लालनपालन ताउम्र करती है इसीलिए मैथिली शरण गुप्त जी की कविता 'अपनी भाषा' पर प्यार में इसका इजहार करते हुए कवि कहते हैं ,भाषा बिना व्यर्थ ही

Edit with WPS Office

जाता ईश्वरीय भी ज्ञान, सब दानों से बहुत बड़ा है, ईश्वर का यह दान। करो अपनी भाषा प्यार।

मनुष्य और भाषा का यह रिश्ता अटूट है शिक्षा के क्षेत्र में भाषा के इस महत्व को देखते हुए छात्रों में भाषिक अभिरुचि बढ़ाने हेतु हिंदी विभाग की छात्राध्यापक प्राजक्ता द्वारा किया गया यह प्रयास बेहद सराहनीय है।

आशा है, इस महाविद्यालय के भाषा विषय तथा अन्य विषय के छात्र भी भाषा का यह कार्य ध्यान में रखते हुए खुद भी भाषिक व्यवहार बढ़-चढ़कर करते हुए अपने छात्रों में भी भाषिक अभिरुचि बढ़ाने में योगदान देंगे।

प्रा.बिजली दडपे

हिंदी विभाग ,

शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, पनवेल

१४ सितंबर २०२४

Edit with WPS Office

उद्देश्य:

1. भाषाई ज्ञान और समृद्धि - विभिन्न भाषाओं (हिंदी, मराठी और अंग्रेजी) के मुहावरे, कहावतें, और कविताओं के माध्यम से पाठकों को भाषाई विविधता और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना।
2. साहित्यिक और सांस्कृतिक समझ - भक्तिकालीन कवियों के पद और दोहों के अध्ययन से पाठकों को भक्ति आंदोलन, उसकी साहित्यिक शैली और उस समय की सांस्कृतिक समझ प्रदान करना।
3. गणना कौशल विकास एवं भाषिक समृद्धि - 1 से 100 तक गिनती के माध्यम से बच्चों और नवशिक्षितों को आसानी से गणना सीखने में सहायता प्रदान करना, अंकों एवं अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करना।
4. महीनों के नामों की जानकारी - हिंदी, मराठी, और अंग्रेजी में महीनों के नामों के अध्ययन से तीन भाषाओं के बीच की समानताएं और अंतर समझने में मदद करना।
5. सृजनात्मकता और दिमागी कसरत - अमीर खुसरो की पहेलियों के माध्यम से पाठकों की सृजनात्मकता, तार्किक सोच और समस्या समाधान कौशल को प्रोत्साहित करना।
6. प्राकृतिक ज्ञान - प्रकृति से संबंधित जानकारी से पाठकों को प्रकृति एवं पर्यावरण, संस्कृति और जीवन में इनकी भूमिका के बारे में जागरूक करना।

उनकी संस्कृति, और जीवन में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक करना।

इस पुस्तिका का उद्देश्य न केवल भाषा और साहित्य की शिक्षा देना है, बल्कि संस्कृति, परंपराओं और प्रकृति के महत्व को भी उजागर करना है।

Edit with WPS Office

अनुक्रमणिका

अ.क्र	अनुक्रमणिका	पृष्ठ क्रमांक
१	शरीर के अंगों पर आधारित मुहावरे	7
२	अमीर खुसरो की पहेलियां	14
३	ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता हिंदी साहित्यिक	16
४	चुनी हुई आधुनिक कविताएं	19
५	महीनों के नाम(हिंदी,मराठी,अंग्रेजी)	24
६	ऋतुओं के नाम (हिंदी,मराठी)	25
७	भक्तिकालीन विख्यात कवियों के पद और दोहे	26
८	मसालों के नाम-सचित्र(हिंदी,मराठी,अंग्रेजी)	38
९	खेल-खेल में हिंदी सीखें	41
१०	घर में इस्तेमाल होने वाले बर्तनों के नाम (हिंदी,मराठी,अंग्रेजी)	42
११	समानांतर हिंदी और मराठी कहावतें	44
	गिनती 1 से लेकर 100 तक	47

Edit with WPS Office

शरीर के अंगों पर आधारित मुहावरे

1. **आंख बिछाना** - प्रेम से स्वागत करना ।
   वाक्य - मैं तुम्हारे प्रतीक्षा में आंखें बिछाये बैठी हूं ।
2. **आंख उठाना** - क्रोध से देखना ।
   वाक्य - मेरे रहते तुम्हारी और कोई भी आंख नहीं उठा सकता ।
3. **आंख खुलना** - जगना ।
   वाक्य - आज मेरे आप पांच बजे खुली ।
4. **आंखें खुलना** - होश आना ।
   वाक्य - ठोकर खाने के बाद सुहास की आंख खुली ।
5. **आंखें दिखाना** - क्रोध आना ।
   वाक्य - अजीब आदमी हो एक तो नुकसान करते हो और ऊपर से आंखें दिखाते हो।
6. **आंखों का तारा** - बहुत प्यार ।
   वाक्य - बालक मां-बाप की आंखों का तारा होता है ।
7. **आंखों से गिरना** - आदर समाप्त होना ।
   वाक्य - दुर्जन समाज की आंखों से गिर जाते हैं ।
8. **आंखों में धूल झोंकना** - धोखा देना ।
   वाक्य - इस लफंगे से सावधान रहना । यह कभी भी तुम्हारी आंखों में धूल झोंक सकता है ।
9. **आंखों पर पर्दा पड़ना** - बुद्धि भ्रष्ट होना ।
   वाक्य - कैकई के आंखों पर न जाने कैसे पर्दा पड़ गया जो उसने मंथरा की बात मानी ।
10. **आंख चुराना** - छिपाते फिरना ।
    वाक्य - राजन मुझसे आंख मत चुराओ तुम्हारी गलती मैंने माफ की है ।
11. **आंख बंद कर काम करना** - ध्यान न रखना ।
    वाक्य - राजन बंद कर काम करेगा तो गलतियां होगी ही ।
12. **आंखों में रात काटना** - रात भर जागते रहना ।
    वाक्य - बच्चों की बीमारी में मां सारी रात आंखों में काटी ।
13. **एक आंख न भाना** - बिल्कुल अच्छा न लगना ।
    वाक्य - आलसी व्यक्ति किसी को एक आंख नहीं भाता ।
14. **एक आंख से देखना** - सबके साथ समान व्यवहार करना ।
    वाक्य - मां बाप अपने सभी बच्चों को एक आंख से देखते हैं ।
15. **आंख लगना** - नींद आना ।
    वाक्य - आज बड़ी देर तक आंख लगी ।
16. **हाथ मलना** - पछताना ।
    वाक्य - समय का लाभ उठाओ नहीं तो हाथ मलते रह जाओगे ।
17. **हाथ डालना** - आरंभ करना ।
    वाक्य - जिस काम में हाथ डालो उसे बीच में मत छोड़ो ।
18. **हाथ पैर मारना** - प्रयत्न करना ।
    वाक्य - हाथ पैर मारने से ही सफलता मिलती है ।
19. **हाथ बंटाना** - सहायता करना ।
    वाक्य - दूसरों के काम में हाथ बंटाने में बड़प्पन है ।

Edit with WPS Office

20. **हाथों हाथ बिकना** - शीघ्र बिकना ।
वाक्य - यह पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है ।
21. **हाथों के तोते उड़ना** - घबरा जाना ।
वाक्य - रोहन का झूठ पकड़ा गया तो उसके हाथों के तोते उड़ गए ।
22. **हाथ लगना** - अचानक मिल जाना ।
वाक्य - रास्ते में चलते-चलते मेरे हाथ एक रुपये का सिक्का लगा ।
23. **हाथ पांव फूलना** - डरना घबराना ।
वाक्य - जंगल में सामने शेर देखकर उसके हाथ पांव फूल गए ।
24. **हाथ तंग होना** - पैसे कम होना ।
वाक्य - आज महंगाई के कारण राघव के हाथ तंग हो गए ।
25. **हाथ का मेल** - साधारण चीज , आसान बात ।
वाक्य - दो चार हजार रूपये खर्च करना उसके हाथ का मेल है ।
26. **हाथ साफ करना** - धोखे से कोई वस्तु लेना ।
वाक्य - चोर ने हाथ साफ करके राघव को कंगाल बनाया ।
27. **हाथ खींचना** - सहायता न करना ।
वाक्य - आज मुझे जरूरत है तो तुमने अपना हाथ खींच लिया ।
28. **हाथ उठाना** - मारना ।
वाक्य - बड़ों पर हाथ उठाना ठीक नहीं है ।
29. **बाएं हाथ का खेल** - आसान बात ।
वाक्य - परीक्षा में उत्तीर्ण होना मेरे बाएं हाथ का खेल है ।
30. **दूर से हाथ जोड़ना** - संबंध न रखना ।
वाक्य - दृष्ट मनुष्य को तो दूर से ही हाथ जोड़ना चाहिए ।
31. **हाथ फैलाना** - दूसरों से मांगना ।
वाक्य - दूसरों के सामने तुम्हें हाथ फैलाना शोभा नहीं देता ।
32. **हाथ धोकर पीछे पड़ना** - बुरी तरह पीछे पड़ना ।
वाक्य - गुरुजी आज तो आप हमारे पीछे हाथ धोकर पड़ गए ।
33. **हाथ बांधे खड़े रहना** - सेवा में उपस्थित रहना ।
वाक्य - आज्ञा कीजिए मैं तुम्हारे सामने हाथ बंधे खड़ा हूं ।
34. **हाथ में करना** - वश में करना ।
वाक्य - उसने अपने पति को अपने हाथ में कर रखा है ।
35. **खाली हाथ होना** - पास में धन ना होना ।
वाक्य - बेटी की शादी कर रामू खाली हाथ हो गया ।
36. **सिर खाना** - तंग करना ।
वाक्य - जाओ मेरा सर मत खाओ ; अपना काम करो ।
37. **सिर चढ़ाना** - अनुचित संरक्षण देना ।
वाक्य - आपने राहुल को इतना सर चढ़ा रखा है , कि वह किसी का आदर नहीं करता ।
38. **सर पर सवार होना** - पीछे पाड़ना।
वाक्य - परीक्षा के वक्त शिक्षक गण सर पर सवार रहते हैं ।
39. **सर ऊंचा होना** - सम्मान बढ़ाना ।
वाक्य - विश्व चषक जीतकर क्रिकेट जगत में भारत का सिर ऊंचा हो गया ।
40. **सर आंखों पर बैठना** - बहुत आदर सत्कार करना ।
वाक्य - मैं अपने माता-पिता को सदा सर आंखों पर बैठता हूं ।

Edit with WPS Office

41. **सर आंखों पर होना** - सदा मान्य होना / सहर्ष स्वीकार होना ।
वाक्य - सरकार आपकी आज्ञा सर आंखों पर ।

42. **सर देना** - जान पर खेल जाना ।
वाक्य - देश के लिए मैं सर देने को तैयार हूं ।

43. **सर पर पांव रखकर भागना** - तेजी से भागना ।
वाक्य - पुलिस को देखकर चोर सर पर पांव रखकर भाग गया ।

44. **सर पर कफन बांधना** - करने के लिए तैयार होना ।
वाक्य - स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने वाले सर पर कफन बांध निकलते हैं।

45. **सर के बाल सफेद होना** - बड़ी अवस्था का होना / अनुभूति होना ।
वाक्य - मेरी बात मानो मेरे बाल यूं ही सफेद नहीं हुए हैं ।

46. **सिर मुंडाते ही ओले पड़ना** - आरंभ में ही संकट आना ।
वाक्य - नया व्यापार करते ही घाट पड़ गया मानो की सर मुंडाते ही आले पड़ गए हैं ।

47. **सर पढ़ना** - जिम्मेदारी का आप पढ़ना।
वाक्य - पिता की मृत्यु के बाद घर का भर उसके सिर आप पड़ गया हे।

48. **सर धुनना** - पछताना
वाक्य -काम बिगडने के बाद सिर धुनने से क्या लाभ ।

49. **कान खोल कर सुनना** - ध्यान से सुनना।
वाक्य - मेरी बात कान खोल कर सुन लो पढ़ाई ना करोगे तो अनुत्तीर्ण होंगे

50. **कान कतरना** - बहुत चतुर होना ।
वाक्य - भोलाराम नाम का भोला है वह तो बड़े बड़ों का कान कतराता है।

51. **कान भरना** - झूठी शिकायत करना ।
वाक्य - मंथरा ने कैकई के कान भर दिए ।

52. **कान पर जूं न रेंगना** - बिल्कुल प्रभाव ना पढ़ना ।
वाक्य - मैंने उससे बहुत समझाया पर उसके कान पर जूं न रेंगी ।

53. **कान खाना** - शोर मचाना ।
वाक्य - ऊंचा बोल-बोल कर मेरे कान क्यों खाते हो ।

54. **कान पकड़ना** - भूल करना , किसी काम को न करने का निश्चय करना ।
वाक्य - मैं कान पकड़ता हूं फिर ऐसा काम नहीं करूंगा ।

55. **कान का कच्चा** - बात मन में ना रख सकना ।
वाक्य - प्राय: सब कुछ दूसरों को बताने वाली औरतें कान की कच्ची होती है ।

56. **कान फूटना** - बहरा होना ।
वाक्य बार-बार कहने पर नहीं आए , क्या तुम्हारे कान फूट गए हैं ।

57. **कानों में उंगली देना** - ध्यान से ना सुनना ।
वाक्य - बार-बार एक ही बात पूछते हो क्या कानों में उंगली दी हुई है ।

58. **दांत खट्टे करना** - हरना ।
वाक्य - भारतीय सेना ने पाकिस्तान सेना के दांत खट्टे कर दिए थे ।

59. **दांत पीसना** - क्रोध करना ।
वाक्य - अपने अपराधों के लिए मुझ पर दांत पीसने से कोई लाभ नहीं होगा ।

Edit with WPS Office

60. **दांत काटी रोटी होना** - घनिष्ठ भिन्नता होना ।
वाक्य - रमेश सुरेश की दांत काटी रोटी है ।

61. **दांत लगना** - कोई चीज पाने की तक में रहना ।
वाक्य - योगेश अपने भाई के संपत्ति पर दांत लगाए बैठा है मौका मिलते ही उसे हड़प लेगा ।

62. **दांतों तले उंगली दबाना** - बहुत हैरान होना ।
वाक्य - उसकी चित्रकारी देखकर हर कोई दातों तले उंगली दबाता है ।

63. **दांत उखाड़ना** - कड़ा दंड देना ।
वाक्य - मेरे सामने मत आओ नहीं तो दांत उखाड़ दूंगा ।

64. **मुंह की खाना** - पराजित होना ।
वाक्य - हमारे बहादुर सैनिकों के सामने शत्रु ने मूंह की खाना स्वाभाविक था ।

65. **मुंह धो लेना** - आशा छोड़ना ।
वाक्य - काम करते नहीं , पैसे मांगने आ गए मुंह धो लो ।

66. **मुंह मोड़ना** - पीछे हटना ।
वाक्य - मैं जो कहता हूं उससे मुंह नहीं मोड़ता ।

67. **मुंह बंद कर देना** - चुप कर देना ।
वाक्य - रमेश ने धन देकर अपने मित्र का मुंह बंद कर दिया ।

68. **मुंह पीला पाडना** - घबरा जाना ।
वाक्य - परीक्षा में प्रश्न-पत्र देखते ही उसका मुंह पीला पड़ गया ।

69. **मुंह दिखाने योग्य न रहना** - बहुत लज्जित होना ।
वाक्य - आज रिश्वत लेते पकड़ा गया तो वह कहीं भी मुंह दिखाने योग्य न रहा ।

70. **मुंह का मीठा** - मीठी बातें करने वाला कपटी ।
वाक्य - वह मुंह का बड़ा ही मीठा है लेकिन अवसर मिलने पर वह पीठ में छूरी घोंपने से नहीं चुकेगा ।

71. **मुंह ताकना** - निर्भर रहना ।
वाक्य - स्वावलंबी बानो छोटी-छोटी बातों के लिए दूसरों का मुंह मत ताको ।

72. **मुंह में खून लगना** - किसी (बुरे) काम का आनंद आना ।
वाक्य - जिन नेताओं के मुंह में पैसा बनाने का खून लगा है उसे उनसे देश का हित नहीं हो सकता

73. **मुंह काला करना** - बुरे काम करना ।
वाक्य - पहले मुंह काला कर के अब धर्मात्मा बनना चाहते हैं ।

74. **मुंह फुला कर बैठना** - रुठना ।
वाक्य - उसे साइकिल नहीं आती तो वह मुंह फुला कर बैठा गया ।

75. **अपने मुंह मियां मीठ्ठा बनना** - अपनी प्रशंसा करना ।
वाक्य - हम तुम्हारे सारे गुनावगुण जानते हैं इसलिए अपने मुंह मियां मीठा बनने से कोई फायदा नहीं ।

76. **अपना-सा मुंह लेकर जाना** - लज्जित होना ।
वाक्य - जब मलिक ने उसकी एक न सुनी तो वह अपना-सा मुंह लेकर रह गया ।

77. **मुंह में पानी आना** - मन ललचाना ।
वाक्य - पेड़ पर लगे आम देखकर मुंह में पानी आ गया ।

Edit with WPS Office

78. **नाक रखना** - आदर रखना ।
वाक्य - समय पर सहायता कर तुमने घर की नाक रख ली और बहन की शादी हो सकी ।

79. **नाक काटना** - सामान्य रहना।
वाक्य - भरी सभा में अपमान करके तुमने मेरी नाक काट दी ।

80. **नाक रगड़ना** - अनुनय करना ।
वाक्य - तुम लगातार नाक रगड़ो लेकिन मैं यह नहीं होने दूंगा ।

81. **नाक भौं सिकुड़ना** - अप्रसन्न होना ।
वाक्य - उसने लाया कपड़ा देखकर रमाने नाका भौं सिकोड़ी ।

82. **नाक में दम करना** - बहुत तंग करना ।
वाक्य - उधम मचा कर रमेश ने नाक में दम कर रखा है ।

83. **नाक पर मक्खी न बैठने देना** - बहुत साफ रहना ।
वाक्य - बहुत ही इठलाना उसकी बात मत करो वह तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती ।

84. **छाती पर पत्थर रखना** - चुपचाप दुख सहन करना ।
वाक्य - बेटे की मृत्यु के बाद केशव ने छाती पर पत्थर रखकर पोते को पाला-पोस ।

85. **छाती पर मूंग दलना** - दुखी करना ।
वाक्य - जिस विधवा मां ने तुम्हें इतना बड़ा किया उसने अलग होकर उनकी छाती पर मूंग मत दलो ।

86. **छाती पर सांप लेटना** - ईर्ष्या से जलना ।
वाक्य - शीतल का अव्वल नंबर आया यह सुनकर राम की छाती पर सांप लेट गया ।

87. **छाती पीटना** - बहुत रोना ।
वाक्य - पहले काम का ध्यान नहीं रखा अब नुकसान देखकर छाती पीटने से क्या होगा ।

88. **पेट बांधकर रहना** - भूखे रहना ।
वाक्य - इस महंगाई में भूखे को पेट बांध कर रहना पड़ता है ।

89. **पेट में चूहे दौड़ना** - खूब भूख लगना ।
वाक्य - मां जल्दी खाना दो पेट में चूहे दौड़ रहे हैं ।

90. **पेट का धंधा** - जीविका का समाधान ।
वाक्य - छोटे शाम का बूट पॉलिश यही पेट का धंधा है ।

91. **पेट की आग बुझाना** - भूख शांत करना ।
वाक्य - पेट की आग बुझाने के लिए उसे दिन-रात काम करना पड़ता है ।

92. **पेट में रखना** - बात छुपाकर रखना ।
वाक्य - सीमा अपने पेट मैं कुछ नहीं रख सकी सारी बात उसने उगल दी ।

93. **पेट पीठ एक होना** - बहुत कमजोर होना ।
वाक्य - भिखारी की पेट पीठ एक हो रही है ।

94. **पेट पर लात मारना** - जीविका छीनना ।
वाक्य - मुझे नौकरी से निकाल कर मेरे पेट पर लात मत मारो ।

Edit with WPS Office

95. **मन गिरना** - उत्साह न रहना ।
वाक्य - कुछ भी करने का साहस उसमें ना था घर का वातावरण मन गिरनेवाला था ।

96. **मन में घर करना** - प्रभावित करना ।
वाक्य - नाटक का विषय इतना सशक्त था की नाटक मन में घर कर गया ।

97. **मन चुराना** - वश में करना ।
वाक्य - कृष्ण के बांसुरी ने मन चुरा लिया ।

98. **मन बढ़ाना** - उत्साहित करना ।
वाक्य - बच्चों का मान बढ़ाते रखना चाहिए ।

99. **मन रखना** - इच्छा पूरी करना ।
वाक्य - मेरा मन रखने के लिए यह काम करो ।

100. **मन मारना** - उदास होना ।
वाक्य - मन मत मारो जो करना है वह करो ।

101. **मन भर आना** - संतुष्ट होना ।
वाक्य - अब जीवन से मन भर आया ।

102. **मन ही मन** - चुपचाप ।
वाक्य - उसने मन ही मन परिश्रम करने का निश्चय किया ।

103. **पैरों तले से जमीन खिसकना** - दुखद समाचार सुनकर घबरा जाना ।
वाक्य - नौकरी गई यह सुनकर उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई ।

104. **पैर जमीन पर ना टिकना** - बहुत जादा खुश होना ।
वाक्य - आमिर ससुराल मिलने पर उसके पैर जमीन पर नहीं टिके ।

105. **पैरों में बेड़ी डालना** - पराधीन होना ।
वाक्य - उसके पैरों में बेदी पड़ी है वह घर वालों के अनुमति के सिवाय नहीं सकती ।

106. **पांव पकड़ना** - क्षमा मांगना ।
वाक्य - पांव पड़कर गलती स्वीकार करो ।

107. **पांव धोकर पीना** - बहुत सम्मान करना ।
वाक्य - उसने तुम्हारे लिए क्या नहीं किया तुम्हें तो उसके पांव धोकर पीने चाहिए ।

108. **उंगली उठाना** - निंदा करना ।
वाक्य - उन्नति करने वालों पर ईर्ष्यालु लोग व्यर्थ ही उंगली उठाते हैं ।

109. **उंगली पर नाचना** - अपनी इच्छानुसार चलना ।
वाक्य - वह तो अपने पति को अपने उंगली पर नचाती है ।

110. **पांचों उंगली घी में होना** - सब प्रकार से लाभ होना ।
वाक्य - नेताजी से दोस्ती करने से उसकी पांचों उंगलियां घी में है ।

111. **कमर कसना** - तैयार होना ।
वाक्य - युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए कमर कास लो ।

112. **कमर सीधी करना** - आराम करना ।
वाक्य - मां ने कहा थोड़ी देर कमर सीधी कर लूं फिर नाश्ता बनाऊंगी ।

113. **बाल पकना** - अनुभवी होना ।
वाक्य - यह काम करते-करते बाल पक गए हैं किसी से पूछने की जरूरत नहीं ।

Edit with WPS Office

114. **बाल बाल बचना** - दुर्घटना होते होते बचना ।
वाक्य - अशोक बस से टकराकर गिर गया लेकिन बाल-बाल बचा ।

115. **बाल बांका न होना** - बिल्कुल हानी न होना ।
वाक्य - ईश्वर रक्षा करने वाला हो तो कोई भी उसका बाल बांका नहीं कर सकता ।

116. **बाल की खाल उतारना** - बहुत तर्क-वितर्क करना ।
वाक्य - अपना काम करो क्यों बोल की खाल उतरते हो ।

117. **गर्दन पर छुरी फेरना** - अत्याचार करना ।
वाक्य - उसके पैसे दे दो क्यों गरीब के गर्दन पर छूरी फिरते हो ।

118. **गर्दन पर सवार होना** - पीछे पड़े रहना ।
वाक्य - यदि काम निकलवाना है तो उसकी गर्दन पर सवार रहो ।

119. **गर्दन झुकना** - लज्जित होना ।
वाक्य - उसका झूठ पकड़ा गया तो उसने गर्दन झुका ली ।

120. **गर्दन उठाना** - विरोध करना ।
वाक्य - जरा गर्दन उठाओगे तो कुचल दिए जाओगे ।

Edit with WPS Office

अमीर खुसरो की पहेलियां

धूपों से वह पैदा होवे।
छांव देख मुरझाए।
एरी सखी मैं तुझसे पुछूं
हवा लगे मर जाए।
उत्तर - पसीना।

आदि कटे तो सबको पाले
मध्य कटे तो सबको मारे
अंत कटे से सबको मीठा
खुसरो वाको आंखों दीठा।
उत्तर- काजल।

सावन-भादों बहुत चलत है,
माघ-पुस में थोरी ।
अमीर खुसरो यूं कहे,
तू बूझ पहेली मोरी।
उत्तर - नाली या मोरी

जल जल चलती बसती गांव
बस्ती में नावा ठांव।
खुसरो ने दिया वाका नांव,
बुझो अर्थ नहीं छोड़ गांव।
उत्तर - नाव

एक थाल मोती से भरा
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे
मोती उसका एक न गिरे।
उत्तर - आसमान में चांद तारे

नारी का एक ही नर,
बस्ती बाहर का घर।
पति सख्त और पेट नरम,
मुंह मीठा तासीर गरम।
उत्तर - खरबूजा

एक नारी के है दो बालक
दोनों एकहि रंग।
एक फिरै एक ठाढ़ा रहे
फिर भी दोनों संग।
उत्तर - चक्की (जाता)

एक कहानी में कहूं
तू सुन ले मेरे पूत
बिना परों वह उड़ गया
बंद गले में सूत
उत्तर - पतंग

बिसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया।
उत्तर - नाखून

घूम-घुमेला लहंगा पहिने,
एक पांव से रहे खड़ी।
आठ हाथ है उस नारी के
सूरत उसकी लगे परी।
उत्तर - छतरी

एक पर रखे सुंदर मूरत
जो देखे वों उसी की सूरत,
फिक्र पहेली पायी ना,
बोझन लागा आयी ना।
उत्तरे - आईना

हरा भरा है मेरा अंग,
रहती हूं मैं डिब्बे में बंद।
डिब्बी खोलना सरल है,
काम बताओ बच्ची मेरा नाम।
उत्तर - मटर

Edit with WPS Office

तीन अक्षर के नाम वाला,
इसका फल है कला कला।
मधुमेह के रोगियों का हितैषी,
छाया होती है छत जैसी।
उत्तर - जामुन

चार अंगुल का पेड़,
सवा मन का पत्ता।
फल लागे अलग-अलग,
पक जाए इकट्ठा।
उत्तर - कुम्हार की चाक

अंचरज बंगला एक बनाया बांस न
बाला बंधन धने ऊपर नींव तरे घर,
छाया कहे खुसरो घर कैसे बने।
उत्तर - बयां पंछी का घोंसला।

एक नार कुएं में रहे
वाका नीर खेत में बहे।
जो कोई वाका नीर को चाखे,
फिर जीवन की आस न राखे।
उत्तर - तलवार

एक जानवर रंग रंगीला,
विना मारे वह रोवे।
उसके सिर पर तीन तिलाके
बिन बताए सोवे।
उत्तर- मोर

चाम मांस वाके नहीं नेक,
हाड- हाड में वाके छेद।
मोहि अचंभो आवत ऐसे
वामे जीव बसत है कैसे।
उत्तर - पिंजड़ा

एक मंदिर के सहस्त्र दर
हर दर में तिरिया का घर।
बीच-बीच वाके अमृत ताल,
भुज है उनकी बड़ी महाल।
उत्तर - मधुमक्खी का छत्ता

ऊपर से एक रंग हो,
और भीतर चित्तीदार
सो प्यारी बातें करें
फिकर अनोखी नार ।
उत्तर - सुपारी

बाल नुचे कपड़े फटे मोती
लिए उतार यह बिपदा
कैसी बनी जो नंगी कर देई
नार
उत्तर - भुट्टा

माटी रौदूं चक धरूं पेरु बारंबार
चातूर होतो जानले मेरी जात
गंवार ।
उत्तर - कुम्हार

गोरी सुंदर पतली केहर,
काले रंग ग्यारह देवर
छोड़ कर चली जेठ के संग
उत्तर - अरहर की दाल

रोटी जली क्यों?
घोड़ा अड़ा क्यों?
पान सड़ा क्यों
उत्तर - फेरा न था

Edit with WPS Office

हिंदी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं की सूचि

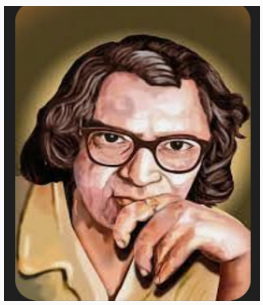

नाम- सुमित्रानंदन पंत
जन्म-२०मई१९००
मृत्यु-२८ दिसंबर १९७७
सन-१९६८ में **चिदंबरा**, काव्य रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार अपने वाले प्रथम हिंदी के लेखक थे।
प्रमुख रचना-वाणी पल्लव, गुंजन युगवाणी, उत्तरा युगपथ, चिदंबरा, कला व बूढ़ा चांद, गीतहंस, युगांत।

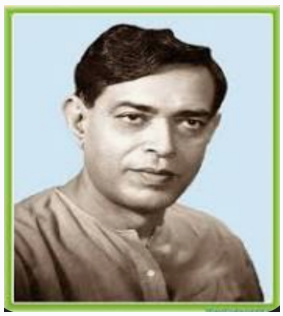

नाम-डॉ रामधारी सिंह दिनकर
जन्म-२३ सितम्बर १९०८
मृत्यु-२४ अप्रैल १९७४
सन१९७२ में उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया था। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले दूसरे कवि हैं।
प्रमुख रचना-उर्वशी, रश्मिरथी, रेणुका, संस्कृति के चार अध्याय, हुकार, सामधेनी, नीम के पत्ते, कुरुक्षेत्र आदि।

नाम-सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय
जन्म- ७ मार्च १९११
मृत्यु- ४ अप्रैल १९८७
सन १९७८ मैं 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।
प्रमुख रचना-शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार आदि

नाम - महादेवी वर्मा जी
जन्म - २६ मार्च १९०७
मृत्यु - ११ सितम्बर १९८७
सन१९८२ में यामा नामक काव्य संकलन के लिए भारत का सर्वोच्च साहित्यकार सामान्य ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था।
प्रमुख रचना-आत्मिका,परिक्रमा,सन्धिनी,यामा गतिपर्व,दीपगीत,स्मारिका,नीलांबर, और आधुनिक महादेवी वर्मा आदि।

Edit with WPS Office

नाम - नरेश मेहता
जन्म - १२ फरवरी १९२२
मृत्यु - २२ नवंबर २०००
सन १९९२ में अरण्या कविता संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।
प्रमुख रचना - अरण्या,उत्तर कथा,चैत्या दो एकांत,प्रवाद पर्व, बोलने दो चीड़ को

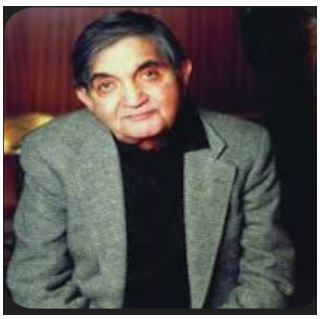

नाम - निर्मल वर्मा
जन्म - ३ अप्रैल १९२९
मृत्यु - २५ अक्तूबर २००५
सन १९९९ में कव्वे और काला पानी इस रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।
प्रमुख रचना- रात का रिपोर्टर, एक चिथडा सुख, लाल टीन की छत,वे दिन आदि।

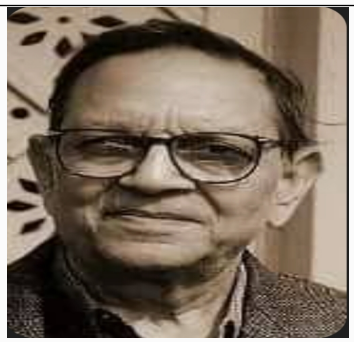

नाम - कुंवर नारायण
जन्म - १९ सितम्बर १९२७
मृत्यु - १५ नवम्बर २०१७
सन २००५ में हिंदी साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था।
प्रमुख रचना - अपने सपने, तीसरा सप्तक, परिवेश हम तुम आदि।

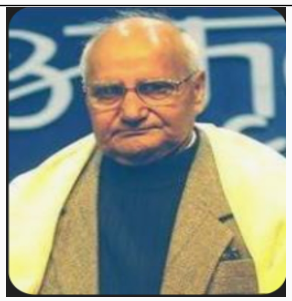

नाम - श्री. अमरकांत लाल शुक्ल
जन्म - १ जुलाई १९२५
मृत्यु - १७ फरवरी २०१४
सन २००९ में संयुक्त रूप से हिंदी साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था।
प्रमुख रचना - अंगद का पांव, अज्ञातवास, आदमी का जहर, सूनी घाटी का सूरज आदि।

Edit with WPS Office

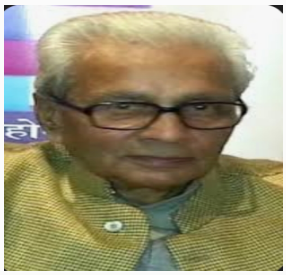

नाम - केदारनाथ सिंह
जन्म - ७ जुलाई १९३४
मृत्यु - १९ मार्च २०१८
सन २०१३ में हिंदी साहित्य में योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था।
प्रमुख रचना - सृष्टि पर पहरा, चौथा संसार, जमीन पक रही है, अकाल में सारस आदि।

Edit with WPS Office

चुनी हुई आधुनिक कविताएं।

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे ?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता ।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन।

निर्झर कहता है- बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है- बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर ।

चलना है केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
रुक जाना ही मर जाना है, निर्झर यह झरकर कहता है।

आरसीप्रसाद सिंह(सन १९११-१९९६)

Edit with WPS Office

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

सूर्य को हमने नहीं देखा सुबह से,
क्या करोगे, सूर्य को क्या देखना है।

इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछा है,
हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है।

पक्ष औ प्रतिपक्ष संसद में मुखर है,
बात इतनी है कि कोई पुल बना है।

रक्त वर्षों से नसों में खौलता है,
आप कहते हैं, क्षणिक उत्तेजना है।

हो गई हर घाट पर पूरी व्यवस्था,
शौक से डूबे जिसे भी डूबना है।

दोस्तो। अब मंच पर सुविधा नहीं है,
आजकल नेपथ्य में संभावना है।

दुष्यंत कुमार (१९३३-१९७५ई)

Edit with WPS Office

सावन

झम झम झम झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम छम छम गिरतीं बूँदें तरुओं से छन के !
चम चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम थम दिन के तम में सपने जगते मन के ।

ऐसे पागल बादल बरसे नहीं घरा पर,
जल फुहार बौछारें धारें गिरतीं झर झर !
आँधी हर हर करती, दल मर्मर, तरु चर्चर,
दिन रजनी औ' पाख बिना तारे शशि दिनकर !

पंखों से रे, फैले फैले ताड़ों के दल,
लम्बी लम्बी अँगुलियाँ हैं, चौड़े करतल ।
तड़ तड़ पड़ती धार वारि की उनपर चंचल,
टप टप झरतीं कर मुख से जल बूँदें झलमल ।

नाच रहे पागल हो ताली दे दे चल दल,
झूम झूम सिर नीम हिलातीं सुख से विह्वल !
हरसिंगार झरते, बेला कलि बढ़ती पल पल,
हँसमुख हरियाली में खग कुल गाते मंगल !

दादुर टर टर करते, झिल्ली बजतीं झन झन,
म्याँउ-म्याँउ रे मोर, पीउ-पीउ चातक के गण !
उड़ते सोन बलाक आर्द्र सुख से कर क्रन्दन,
घुमड़ घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन !

वर्षा के प्रिय स्वर उर में बुनते सम्मोहन,
प्रणयातुर शत कीट विहग करते सुख गायन !
मेघों का कोमल तम श्यामल तरुओं से छन !
मन में भू की अलस लालसा भरता गोपन !

रिमझिम रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते, छूते वे भीतर अन्तर !
धाराओं पर धाराएँ झरतीं धरती पर,
रज के कण कण में तृण तृण की पुलकावलि भर !

पकड़ वारि की घार भूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन !
इन्द्र धनुष के झूलें में झूलें मिल सब जन,
फिर फिर आये जीवन में सावन मन भावन !

सुमित्रानंदन पंत

Edit with WPS Office

अपनी भाषा पर प्यार

करो अपनी भाषा पर प्यार।
जिसके बिना मूक रहते तुम,
रुकते सब व्यवहार।।

जिसमें पुत्र पिता कहता है, पत्नी प्राणाधार,
और प्रकट करते हो जिसमें तुम निज निखिल विचार।
बढ़ाओ बस उसका विस्तार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्यक हैं इसके उपकार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।

यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान-प्रसाद,
और तुम्हारा भी भविष्य को देगी शुभ संवाद।
बनाओ इसे गले का हार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।

- मैथिलीशरण गुप्त

Edit with WPS Office

बारहमासा

चेत लिए फूलों की अंजली
बिखराने को आता।

लू के झोंकों में पलभर
बैसाख तभी आ जाता ।।
और जेठ दुपहर नरतपकर
आँधी पानी लाता।

वर्षा के रिमझिम गीतों को
गा, आषाढ़ सुनाता ।।

पेड़ों की डाली-डाली को
सावन झूम झुलाता।
नदियों औ' सागर में पानी
भरने भादों आता ।।

लिए काँस के फूल गोद में
क्वाँर तभी मुसकाता।
ज्वार बाजरे की बातों से
कार्तिक खेत सजाता।।

अगहन गन्नों में रस भरता
धानों को लहराता।
पूस बरफ की चादर में
जग को लिपटाने आता ।।

माघ देखकर सरसों फूलीं
फूला नहीं समाता।
फागुन आमों की बौरों से
बागों को महकाता ।।

कीर्ति चौधरी (सन 1935 ई.)

Edit with WPS Office

हिंदी, मराठी, अंग्रेजी, महीनों के नाम।

हिंदी महीने	मराठी महीने	अंग्रेजी महीने
चैत्र	चैत्र	January
बैसाख	वैशाख	February
जेठ	ज्येष्ठ	March
आषाढ़	आषाढ	April
सावन	श्रावण	May
भादों	भाद्रपद	June
क्वार	आश्विन	July
कार्तिक	कार्तिक	August
अगहन	मार्गशीर्ष	September
पुस	पौष	October
माघ	माघ	November
फागुन	फाल्गुन	December

Edit with WPS Office

ऋतुओं के नाम (हिंदी मराठी)

अ .क्र	हिंदी	मराठी
१	बसंत ऋतु	वसंत ऋतु
२	ग्रीष्म ऋतु	ग्रीष्म ऋतू
३	वर्षा ऋतु	वर्षा ऋतु
४	शरद ऋतु	शरद ऋतू
५	हेमंत ऋतु	हेमंत ऋतू
६	शीत ऋतु	शिशिर ऋतू

Edit with WPS Office

भक्तिकालीन विख्यात कवियों के पद और दोहे

संत कबीर दास जी के प्रसिद्ध दोहे।

- कर्मकांड विरोध पर लिखे दोहे।

1. कबीर माला मनहि की, और संसारी भीख।
माला फेरे हरि मिले, गले रहट के देख।।
2. पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

- गुरु की महत्ता पर लिखे दोहे।

1. गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

- कर्मकांड पर लिखे दोहे।

1. कांकर पात्थर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
तो चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

- अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

- तिनका कबहूं ना नदियें, जो पांव तले होय।
कबहूं उड़ आंखों में पड़े पीर घनेरी होय।।

- हिंदू काहे मोहि राम पियारा,और तुर्क कहे रहमान।
आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम कोऊ जाना।।

- गुरु की आज्ञा आवैं, गुरु के आज्ञा जाय।
कहैं कबीर सों संत है, आवागमन नशाय।।

- जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूडन डरा,रहा किनारे बैठ।।

- एकै पवन एक ही पीना, एक ज्योति संसार।
एक ही खाक घड़े सब भाड़े,एक ही सिरजनहारा।।

- निर्धन आदर कोई ना दे, लाख जतन करैं कहुं चिंतन धरेई।

- साई इतना दीजिये जामे कुटुम समय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय।।

Edit with WPS Office

- गुरु पारस को आंतरो, जानत है सब संत।
  वह लोहा कंचन करें, ये करि लिये महंत।।

- माला फेरत युग भया, फिरा न मन का फेर।
  कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

- साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
  सार-सार को गहि रहे,थौथा देई उड़ाय।।

- बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
  पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

- दुख में सुमिरन सब करें, सुख में कर ना कोय ।
  जो सुख में सुमिरन करें, तो दुःख काहे को होय ।।

- कुमति कीच चेला भरा गुरु ज्ञान जल होय।
  जनम-जनम का मोरचा,पल में डारे घोय।।

- धीरे-धीरे रे मना, धीरे से सब कुद्द होय।
  माली सीचें सौं घड़ा ऋतु आए फल होय।।

- या दुनिया दो रोज की, मत कर यासों हेत।
  गुरु चरनन चित लाइये, जो पुरान सुख होत।।

- कागद लिखै सो कागदी, को व्यहारी जीव।
  आत्म दृष्टि कहां लिखै, जी देखो तित पीव।।

- ज्ञान भक्ति वैराग्य सुख,पीव ब्रम्हा लौ घाये।
  आतम अनुभव सेज सुख,तहन ना दूजा जाये।।

- ताको लक्षण की कहै, जाको अनुभव ज्ञान।
  साघ असाघ ना देखिये, क्यों करि करून बखान।।

- दूजा हैं तो बोलिए, दूजा झगड़ा सोहि।
  दो अंधों के नाम में, कापै काको मोहि।।

- नर नारी के सुख को खांसी नहीं पहचान।
  त्यों ज्ञानी के सुख को, अज्ञानी नहीं जान।।

- अंधों का हाथी सही, हाथ टटोल-टटोल।
  आंखों से नहीं देखिया,ताते विन-विन बोल।।

Edit with WPS Office

बिहारी के प्रमुख पद

. दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित्त प्रीति।
परिति गांठि दुरजन-हियै, दई नई यह रीति।।

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।

. गिरि तैं ऊंचे रसिक-मन बूढे जहां हजारु।
बहे सदा पसु नरनु कौ प्रेम-पयोधि पगारु।।

स्वारथु सुकृतु न, श्रमु वृथा,देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि परि तू पछिनु न मारि।।

कनक कनक ते सौं गुनी मादकता अधिकाय।
इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।

अंग-अंग नग जगमगत,दीपसिखा सी देह।
दिया बढ़ाए हू रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जग नाइक, जग बाइ।।

या अनुरागी चित्त की,गति समुझे नहिं कोई।
ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रंग,त्यौं-त्यौ उज्जलु होइ।।

जसु अपजसु देखत नहीं देखत सांवल गात।
कहा करौं, लालच-भरे चपल नैन चलि जात।।

मेरी भाव-बाधा हरौ,राधा नागरि सोइ।
जां तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।।

कीनैं हुँ कोटिक जतन अब कहि काढ़े कौनु।
भो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मैं कौ लौनु।।

तो पर वारौं उरबसी,सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसीं, ह्वै उरबसी समान।।

Edit with WPS Office

कहत,नटत, रीझत,खीझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है,नैननु ही सब बात।।

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हज़ार।
मो संपति जदुपति सदा,विपत्ति-बिदारनहार।।

कहा कहूँ बाकी दसा,हरि प्राननु के ईस।
विरह-ज्वाल जरिबो लखै,मरिबौ भई असीस।।

जपमाला,छापें,तिलक सरै न एकौकामु।
मन कांचे नाचै वृथा,सांचे राचै रामु।।

घरु-घरु डोलत दीन हैं,जनु-जनु जाचतु जाइ।
दियें लोभ-चसमा चखनु लघु पुनि बड़ौ लखाई।।

मोहन-मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जोई।
बसतु सु चित्त अन्तर, तऊ प्रतिबिम्बितु जग होइ।।

मैं समुझयौ निरधार,यह जगु काँचो कांच सौ।
एकै रूपु अपर, प्रतिबिम्बित लखियतु जहाँ।।

Edit with WPS Office

रहीमदास के प्रसिद्ध दोहे

प्रेम का महत्व बताने वाले दोहे

रहीमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे पे फिर ना जुरे , जुरे गांठ परी जाय ।।

. खीरा सीर ते काटी के , कलियत लैंन लगाया ।
रहिमान करुए मुखन को , चाहिए यही सजाय ।।

लघु का महत्व बताने वाले दोहे

रहिमन देखि बडेन को लघु न दीजिए डारि ।
जहां काम आवे सुई , कहां रे तरवारि ।।

समय पाय फल होते हैं , समय पाय झरि जाय ।
सदा रहे नहीं एक सी , का रहीम पछिताए ।।

कहि रहीम इक दीप तें प्रगट सबै दुति होय ।।
तन सनेह कैसे दूरै दृग दीपक जरू दोय ।।

रूठे को मानने वाले दोहे

रूठे सजन मनाइए , जो रूठे सौ बार ।
रहिमन फिरि फिरि पोइए , टूटे मुक्ता हार ।।

बानी ऐसी बोलिये , मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै , आपहु सीतल होय ।।

परोपकार पर लिखे हुए दोहे

तरुवर फल नहीं खात है , सरवर पयहि न पान ।
कहि रहीम पर काज हित , संपत्ति संचहि सृजान ।।

छिमा बड़न को चाहिये छोटन को उतपात ।
कह रहीम हरि का घटयौ , जो भृग मारी लात ।।

रहिमन निज मन की बिथा , मन ही रखो गोय ।
सूनी इठलै है लोग सब , बांटी न लें है कोय ।।

Edit with WPS Office

विपदा के परीक्षा पर बने दोहे

रहिमन विपदा हु भली , जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में , जान परत सब कोय ।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष प्यापे नहीं , लिपटे रहत भुजंग ।।

जैसी परे सो सहि रहे , कहि रहिम यह देह ।
धरती पर परत है , सीत धाम औ मेह ।।

दोनों रहिमन एक से , जो लों बोलत नाहिं ।
ज्ञान परत हैं काक पिंक , रितु बसंत के माहिं ।।

निज कर क्रिया रहीम कहिं , सीधी भावी के हाथ ।
पांसे अपने हाथ में , दांव न अपने हाथ ।।

रहिमन रीति सराहिए जो घट गून समय होय ।
भिति आप पे डारि कें , सब पियावै तोय ।।

संपत्ति भरम गवाई के , हाथ रहत कुछ नहीं ।
ज्यों रहीम ससि रहत है ,दिवस अकासही माहिं ।।

माह मास लहि टेसुआ , मीन परे थल और ।
त्यो रहीम जग जानिए , छुटे आपुने ठौर ।।

रहीम कानन मूल्यों , वसा करिय फल ।
भोग बंधू मध्य धनहीन हवै , बसिबो उचित न योग ।।

पावस देखि रहीम कोइल साधे मौन ।
अब दादूर वक्ता भए , हमको पूछे कौन ।।

वे रहिम नर धन्य हैं पर उपकारी अंग ।
बांटन वारे को लगें , ज्यों मेहंदी को रंग ।।

ओछे को सत्संग , रहिमन तजहु अंगार ज्यों ।
वातों जारै अंग , सीरै पे कारौ लगै ।।

लोहे की न लोहार की , रहिमन कहीं विचार जा ।
हरि मारे सीस पै , तबाही की तलवार ।।

तासो ही कुछ पाइए कीजे जाकी आस ।
रीते सरवर पर गए कैसे बुझे पियास ।।

Edit with WPS Office

रहिमन नीर पखान बड़े पै सीझे नहीं ।
तैसे मुरख ज्ञान , बुझै पै सुझै नहीं ।।

साध सराहै साधुता , जाती जोखिता जाना ।
रहिमन सांचे की बैरी कराइ बखान ।।

राम न जाते रहिन संग , सिया न रावण- साथ ।
जो रहीम भावी कतहूं , होत आपुने हाथ ।।

रहिमन औछे नरन सौ , बैर भली ना प्रति ।
काटे चाटे स्वान के , दोउ भांती विपरीत ।।

मथत मधत माखन रहे , दही मही बिलगाय ।।
रहिमन सोई मीत है भीर परे ठहराय ।।

रहिमन वहां न जाइऐ जहां कपट को हेत ।
हम तो ठारत ठाकुर्ली संचित अपनों खेत ।।

बिगरी बात बने नहीं , लाख करो किन कोय ।
रहिमन काटे दूध को , मथे न माखन होय ।।

Edit with WPS Office

तुलसीदास के प्रसिद्ध दोहे

तुलसी किया खेत है, मनसा भयौं किसान।
पाप-पुण्य दोउ बीज है,बुवै सौं लुनै निदान।।

राम नाम अवलंब बिनु, परमार्थ की आस।
बरषत वारिदा-बुंदे दही गहि चाहत चढ़ने अकास।।

तुलसी सब चल छांड़ी कै,किजै राम-सनेह।
अंतर पति सो है कहा, जिंन देखि सब देह।।

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार।
राग न रोष न दोष, दास भए भव पार।।

तुलसी जौ पै राम सों,नाहिंन सहज सनेह।
मुंड मुंडायों बादिही, भांड़ भखो तिज गेह।।

दंपति रस रसना दसन परिजन बदन सुगेह।
तुलसी हर हित बरन सिसु संपति सहज सनेह।।

तुलसी साथी विपति के, विद्या, विनय, विवेक।
साहस सुकृत, सुसत्य-व्रत, राम-भरोसों एक।।

तुलसी परिहरि हरि हरिह,पांवर पुजहिं भूत।
अंत फजीहत हो हिंगे,गनिका के से पुत।।

लोग मगन सब जोग हीं, जोग जायं बिनु छेम।
त्यों तुलसी के भागवत, राम प्रेम बिनु नेम।।

तुलसी जस भवितव्या तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै,ताहि वहां लै जाय।।

राम-नाम-मनि-दीप धरू जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसि उजियार।।

हियं निर्गुन नयनन्हि सगुन,रसना राम सुनाम।
मनहुं पुरट संपुट लसत, तुलसी ललित ललाम।।

दुर्जन दर्पण समय सदा करि देखौ हिय गौर।
संमुख की गति है, विमुख में पर और।।

रघुपति कीर्ति कामिनी,क्यों कहे तुलसीदास।
सरद अकास प्रकास ससि, चार चिबुक तिल जासू।।

Edit with WPS Office

अमिय गारि गारेउ गरल, नारी करि करतार।
प्रेम बैर की जननि युग,जानहिं बुध न गंवार।।

घर दीन्हे घर जाते हैं, घर छोड़े घर जाय।
तुलसी घर बन बीच राहू राम प्रेम-पुर छाय।।

बिनू विश्वास भगति नहीं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम-कृपा बिनू सपनेहुं, जीव न लहि विश्राम।।

गंगा जमुना सरस्वती, सात सिंधु भरपूर।
तुलसी चातक के मतें, बिन स्वाती सब धूर।।

ऊंची जाति पपीहरा,पियत न नीचौ नीर।
कै याचै घनश्याम सों के दुख सहैं सरीर।।

राम नाम अवलंब बिनु, परमारथ की आस।
बरसत बारिद बूंद गहि, चाहत चढ़न अकास।।

राम भरोसो राम बल, राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल, मांगत तुलसीदास।।

तुलसी संत सुअब तरु फूलि फलहि पर हेत।
इतत ये पाहन हनतु,उतते वे फल देत।।

असन बसन सुत नारि सुख,पापिहुं के घर होइ।
संत - समागम रामधन, तुलसी दुर्लभ दोई।।

Edit with WPS Office

मीरांबाई के प्रमुख पद

1. मनमोहन कान्हा विनती करूं दिन रैन।
राह तके मेरे नैना ।
अब तो दरस देदो कुंज बिहारी ।
मानव है बेचैन ।
नेहा की डोरी तुम संग जोड़ी ।
हमसे तो नहीं जावेगी तोड़ी ।
हे मुरलीधर कृष्ण मुरारी ।
तनिक न आवे चैन ।
राह तके मेरे नैना में म्हारो सुपनमा ।
लिसते तो मैं म्हारी सुपनमा ।।

2. पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वास्तु अमौलिक दी मेरे सतगुरु
किरपा कर अपना तो-पायो जी मैंने ।
खर्च ने चटे चोर ने लूटे
दिन दिन बढ़ता सवायो-पायो जी मैंने ।
सत की नाव केवाटिया सत्गुरु भवसागर
तरायो-पायो जी मैंने ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हर्ष हर्ष
जस गायो-पायो जी मैंने ।।

3. मतवारो बादल आयें लें
हरी की संदेसो कछु न लायें रे
दादूर मोर पपीहा बोले
कोयल सबद सुनावे रे
काली अंधियारी बिजली चमके
बारहिना अती दर्पायो रे
मन रे परसी हरि के चरण
लिसतें तो मन रे परसी हरि के चरण

4. भज मना चरण-कंवल अविनाशी ।
जेताई दीसै धरनी गगन विच,
तेता सब उठ जासी ।।
इस देही का गरब ना करणा,
माटी में मिल जासी ।।
तो संसार चहर की बाजी, साझ
पडया उठ जासी ।।
कहा भयों है भगवा पहरया , घर
तज भये सन्यासी ।

Edit with WPS Office

जोगी होई जुगती नहीं जानी ।
उलटी जन्म फिर आसी ।।
अरज करू अबला कर जोरे ,
श्याम ! तुम्हारी दासी
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ।
काटो जम के फांसी ।।

5. दरस बिनु दुखण लागे नैन ।
जब के तुम विरह प्रभु मोरे
कबहुं ना पायो चैंन ।।
सबद सुनत मेरी छातियां कांपे
मीठ-मीठे बैन ।
बिरह कथा कांसु कहुं सजनी ,
बह गई करवत ऐन ।।
कल परत पल हरि मग जोंवत
भई छमासी रेन ।
मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे
दुःख मेंटण सुख देण ।।

6. बरसै बदरिया सावन की
सावन की मन भावन की ।
सावन में उमंग्यो मेरो मणवा
भनक सुनी हरी आवन की ।।
उमर घूमड चहुं दिससे आयो ,
दमन दमके झर लावन की ।
नान्ही नान्ही बंदून मेहा बरसै ,
सीतल पन सोहावन की ।।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर ,
आनन्द मंगल गावन की ।।

7. राणाजी म्हें तो गोविंद का गुण गास्यां ।
चरणामृत को नेम हमारो नित
उठ दरसण जास्यां ।।
हरि मंदिर में निरत करास्यां
घुंघरियां घमकास्यां ।
राम नाम का झांझ चलास्यां
भव सागर तर जास्यां ।।
यह संसार बाड़ का कांटा ज्यां
संगत नहि दास्तां ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
निरख परख गुण गास्यां।।

Edit with WPS Office

8. फूल मगाऊ हार बनाऊ ।
मालिन बनकर जाऊं ।।
कैं गुन ले समझाऊं । राजधन कै
गुन ले समजाऊं ।।
गला सैली हात सुमरनी ।
जपत घर जाऊं
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर
बैठत हरिगुण गाऊं ।।

Edit with WPS Office

मसाला के नाम

अ. क्र	हिंदी	मराठी	अंग्रेजी	चित्र
1	लौंग	लवंग	clove	
2	इलायची	वेलची	Cardomom	
3	जीरा	जिरे	Cumin seeds	
4	सरसों राई	मोहरी	Mustard	
5	काली मिर्च	काळी मिरी	Black pepper	
6	तिल	तीळ	Sesame seeds	
7	दालचीनी	दालचिनी	Cinnamon sticks	
8	जावित्री	जायपात्री	Mace	
9	हल्दी पाउडर	हळद पावडर	Turmeric powder	

Edit with WPS Office

10	अजवाइन	ओवा	Carom seeds	
11	सौंफ	बडीशेप	Aniseeds	
12	तेजपत्ता	तमालपत्र	Bay leaf	
13	पुदीना	पुदिना	Mint	
14	कड़ीपत्ता	कढीपत्ता	Carry leaves	
15	कोकुम	कोकम	Kokum	
16	तुलसी के पत्ते	तुळशीची पाने	Basil leaves	
17	बेकिंग सोडा	बेकिंग सोडा	Baking soda	
18	सफेद मिर्च	पांढरी मिरी	White pepper	
19	लाल मिर्च	लाल मिरची	Red chilli	
20	अदरक	आले	Ginger	

Edit with WPS Office

	गुड़	गुळ	Jaggery	
	लहसुन	लसुन	Garlic	
	गरम मसाला	गरम मसाला	Garam masala	
	धनिया	धने	Coriander	
	जफरान/केसर	केसर	Saffron	
	आंवला	आवळा	Gooseberry	

Edit with WPS Office

बच्चों को खेल-खेल में हिंदी सिखाने के लिए कुछ रचनात्मक और मजेदार तरीकों का उपयोग किया जा सकता है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं:

1. **शब्द खेल** - बच्चों के साथ शब्दों का खेल खेलें जैसे कि अंताक्षरी, जिसमें वे हिंदी के शब्दों से गाने गाते हैं। इससे उनकी शब्दावली बढ़ती है।

2. **फ्लैश कार्ड्स** - हिंदी वर्णमाला और शब्दों के फ्लैश कार्ड्स बनाएं। बच्चे उन्हें देखकर शब्द पहचान सकते हैं और उच्चारण सीख सकते हैं।

3. **हिंदी कहानियाँ** - बच्चों को हिंदी की सरल और मजेदार कहानियाँ सुनाएँ। कहानी के पात्रों की आवाज़ निकालकर सुनाएँ, जिससे उनकी रुचि बनी रहे।

4. **पाठ्य पुस्तक के खेल** - हिंदी की पाठ्य पुस्तक से खेल निकालें। जैसे कि वर्णमाला जोड़ो, शब्द ढूंढो, या वाक्य पूरा करो। इससे बच्चों को पढ़ाई मजेदार लगेगी।

5. **कार्टून और गीत** - हिंदी कार्टून और बच्चों के गीत दिखाएँ। इससे वे हिंदी के शब्दों और उच्चारण को स्वाभाविक रूप से सीखेंगे।

6. **रोल प्ले** - बच्चों के साथ हिंदी में संवाद करके छोटे-छोटे रोल प्ले करें। जैसे कि दुकानदारी खेलना या स्कूल का खेल। इससे उन्हें हिंदी बोलने का अभ्यास मिलेगा।

7. **हिंदी खेलऑनलाइन** - हिंदी खेल या मोबाइल ऐप्स का उपयोग करें जो बच्चों को खेल-खेल में हिंदी सिखाते हैं।

8. **पजल और क्रॉसवर्ड** - हिंदी शब्दों के पजल या क्रॉसवर्ड खेलों का उपयोग करें, जो उनके शब्द ज्ञान को बढ़ाते हैं और सोचने की क्षमता को विकसित करते हैं।

इन सभी तरीकों से बच्चों को बिना किसी दबाव के हिंदी सीखने में मजा आएगा और वे तेजी से इसे अपनाएंगे।

Edit with WPS Office

बर्तन के नाम (हिंदी, मराठी, अंग्रेजी)

अ.क्र	हिंदी	मराठी	अंग्रेजी	चित्र
1	तवा	तवा	Griddle	
2	गिलास	ग्लास	Glass	
3	चाय छलनी	चहाची गाळण	Tea stainer	
4	छलनी	चाळणी	Sieve	
5	चम्मच	चमचा	Spoon	
6	कड़छी	पळी	Ladle	
7	डोलंची	दुधाचा डब्बा	Milkcan	
8	कढ़ाई	कढई	Wok	
9	भगोना/पतिला	पातेला	Stainless steel pot	

Edit with WPS Office

10	डिब्बा	डबा	Container	
11	पल्लटा	उल्लथी	Turner flat spoon	
12	कद्दूकस	किसनी	Grater	
13	छिलने वाला चाकू	साले काढण्याची तासणी	Peelar	
14	चिमटा	चिमटा	Tongs	
15	जारा	जरा चमचा	Frying spoon	
16	चाकू	सुरी	Knife	
17	थाली	ताट	Plate	
18	परात	परात	High hipped platter	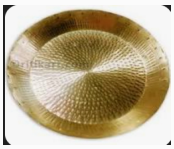
19	कटोरी	वाटी	Bowl	

Edit with WPS Office

समानानंतर हिंदी और मराठी कहावतें

अधजल गगरी छलकत जाए।	उथळ पाण्याल खळखळाट फार.
अब पछताए क्या होता है जब चिडियाँ चुग गयी खेत ।	बैल गेला व झोपा केला.
काला अक्षर भैंस बराबर।	अंगठे बहाद्दर.
चिराग तले अंधेरा ।	दिव्याखाली अंधार.
छोटा मुँह बडी बात ।	लहान तोंडी मोठा घास.
जिसकी लाठी उसकी भैंस ।	बळी तो कान पिळी.
पहले आत्मा फिर परमात्म।	आधीपोटोबा मग विठोबा
नदी में रहकर मगरसे बैर।	पाण्यात राहून माशाशी वैर.
बंदर क्या जाने अदरक का भाव।	गाढवाला गुळाची चव काय ?
मियाँ की दौड मसजिद तक ।	सरड्याची धाव कुंपणापर्यंत
खोदा पहाड निकली चूहिया ।	डोंगर पोखरून उंदीर काढणे.
आम के आम गुठलियों के दाम ।	एका दगडात दोन पक्षी
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे ।	चोराच्या उलट्या बोबा
चोर की दाढी में तिनका।	चोराच्या मनात चांदणे
गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा।	काखेत कळसा गावाला वळसा.
खाने के दांत और दिखाने के दांत और।	खायचे दात वेगळे दाखवायचे दात वेगळे
अंधों में काना राजा।	वासरात लंगडी गाय शहाणी.
कौवा चला हंस की चाल अपनी भी भूला।	हाताचे सोडून पळत्याच्या मागे.

Edit with WPS Office

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	परट्याचा कुत्रा न घराचा न घाटाचा.
एक तवे की रोटी क्या बड़ी क्या छोटी।	एका माळेचे मणी.
एक हाथ से ताली नहीं बजती।	एका हाताने टाळी वाजत नसते.
बात लाख की, करनी खाकी करनी।	खाणे थोडे मिचमिच फार.
कहां राजा भोज कहां गंगू तेली।	कोठे इंद्राची ऐरावत कोठे शाम भट्टाची तट्टाणी.
जो गरजते हैं सो बरसते नहीं।	गर्जेल तो वर्षेल काय ?
चमारों के कोसे ढोर नहीं मरते ।	कावळ्याच्या शापाने गाय मरत नाही.
ऊंट के मुंह में जिरा।	डोंगरास दुःख औषध शिंपीभर.
एक अनार सौ बीमार।	रात्र थोडी सोंगे फार.
करे कल्लू भरे लल्लू ।	चोर सोडून संन्याशाला फाशी.
फुई-फुई से तालाब भरता है ।	थेंबे थेंबे तळे साचे.
तेते पांव पसारिए जितनी लंबी सौर ।	अंथरूण पाहून पाय पसरावे.
इधर खाई उधर कुआं।	इकडे आड तिकडे विहीर.
घर की मुर्गी दाल बराबर।	पिकते तेथे विकत नाही.
कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी।	कडू कारले तुपात तळले साखरेत घोळले तरी कडू ते कडूच.
नाच ना आवे आंगन टेढ़ा ।	नाचता येईना अंगण वाकडे.

Edit with WPS Office

1 से लेकर 100 तक अंक (हिंदी मराठी अंग्रेजी)

अंक	हिंदी	मराठी	अंग्रेजी
१	एक	एक	One
२	दो	दोन	Two
३	तीन	तीन	Three
४	चार	चार	Four
५	पांच	पाच	Five
६	छह	सहा	Six
७	सात	सात	Seven
८	आठ	आठ	Eight
९	नो	नऊ	Nine
१०	दस	दहा	Ten
११	ग्यारह	अकरा	Eleven
१२	बाराह	बारा	Twelve
१३	तेराह	तेरा	Thirteen
१४	चौदह	चौदा	Fourteen
१५	पंद्रह	पंधरा	Fifteen
१६	सोलह	सोळा	Sixteen
१७	सत्रह	सतरा	Seventeen
१८	अठारह	अठरा	Eighteen
१९	उन्नीस	एकोणीस	Nineteen
२०	बीस	वीस	Twenty
२१	इक्कीस	एकवीस	Twenty one
२२	बाईस	बावीस	Twenty two
२३	तेईस	तेवीस	Twenty three
२४	चौबीस	चोवीस	Twenty four
२५	पच्चीस	पंचवीस	Twenty five
२६	छब्बीस	सव्वीस	Twenty six
२७	सत्ताईस	सत्तावीस	Twenty seven
२८	अट्ठाईस	अठ्ठावीस	Twenty eight
२९	उनतीस	एकोणतीस	Twenty nine
३०	तीस	तीस	Thirty
३१	इकतीस	एकतीस	Thirty one
३२	बत्तीस	बत्तीस	Thirty two
३३	तैंतीस	तेहत्तीस	Thirty three
३४	चौंतीस	चौतीस	Thirty four
३५	पैंतीस	पस्तीस	Thirty five
३६	छत्तीस	छत्तीस	Thirty six
३७	सैंतीस	सदतीस	Thirty seven

Edit with WPS Office

३८	अड़तीस	अडतीस	Thirty eight
३९	उनतालीस	एकोंचाळीस	Thirty nine
४०	चालीस	चाळीस	Forty
४१	इकतालीस	एकेचाळीस	Forty one
४२	बयालीस	बेचाळीस	Forty two
४३	तैंतालीस	त्रेचाळीस	Forty three
४४	चौवालीस	चौवेचाळीस	Forty four
४५	पैंतालीस	पंचेचाळीस	Forty five
४६	छियालीस	शेचाळीस	Forty six
४७	सैंतालीस	सत्तेचाळीस	Forty seven
४८	अड़तालीस	अठ्ठेचाळीस	Forty eight
४९	उनचास	एकोनपन्नास	Forty nine
५०	पचास	पन्नास	Fifty
५१	इक्कावन	एकावन्न	Fifty one
५२	बावन	बावन्न	Fifty two
५३	तिरपन	त्रेपन्न	Fifty three
५४	चौवन	चौपन्न	Fifty four
५५	पचपन	पंचावन्न	Fifty five
५६	छप्पन	छप्पन्न	Fifty six
५७	सत्तावन	सत्तावन्न	Fifty seven
५८	अट्ठावन	अठ्ठावन्न	Fifty eight
५९	उनसठ	एकोनसाठ	Fifty nine
६०	साठ	साठ	Sixty
६१	इकसठ	एकसष्ठ	Sixty one
६२	बासठ	बासष्ठ	Sixty two
६३	तिरसठ	त्रेसष्ठ	Sixty three
६४	चौसठ	चौसष्ठ	Sixty four
६५	पैंसठ	पासष्ठ	Sixty five
६६	छियासठ	सहासष्ठ	Sixty six
६७	सड़सठ	सदूसष्ठ	Sixty seven
६८	अड़सठ	अडूसष्ठ	Sixty eight
६९	उनहत्तर	एकोनसत्तर	Sixty nine
७०	सत्तर	सत्तर	Seventy
७१	इकहत्तर	एकाहत्तर	Seventy one
७२	बहत्तर	बाहत्तर	Seventy two
७३	तिहत्तर	त्र्याहत्तर	Seventy three
७४	चौहत्तर	चौऱ्याहत्तर	Seventy four
७५	पचहत्तर	पंच्याहत्तर	Seventy five
७६	छिहत्तर	शहाहत्तर	Seventy six
७७	सतहत्तर	सत्याहत्तर	Seventy seven
७८	अठहत्तर	अठ्याहत्तर	Seventy

Edit with WPS Office

			eight
७९	उन्नासी	एकोनऐंशी	Seventy nine
८०	अस्सी	ऐंशी	Eighty
८१	इक्यासी	ऐक्याऐंशी	Eighty one
८२	बयासी	ब्याऐंशी	Eighty two
८३	तिरासी	त्र्याऐंशी	Eighty three
८४	चौरासी	चौऱ्याऐंशी	Eighty four
८५	पचासी	पंच्याऐंशी	Eighty five
८६	छियासी	शहाऐंशी	Eighty six
८७	सतासी	सत्याऐंशी	Eighty seven
८८	अठासी	अठ्ठाऐंशी	Eighty eight
८९	नवासी	एकोनव्वद	Eighty nine
९०	नब्बे	नव्वद	Ninety
९१	इक्यानवे	एक्यान्नव	Ninety one
९२	बानवे	ब्यान्नव	Ninety two
९३	तिरानवे	त्र्यान्नव	Ninety three
९४	चौरानवे	चौऱ्यान्नव	Ninety four
९५	पंचानवे	पंच्यान्नव	Ninety five
९६	छियानवे	शहान्नव	Ninety sis
९७	सत्तानवे	सत्यान्नव	Ninety seven
९८	अट्ठानवे	अठ्यान्नव	Ninety eight
९९	निन्यानवे	नव्यान्नव	Ninety nine
१००	सौ	शंभर	Hundred

Edit with WPS Office